शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2022
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

टैगोर के शिक्षा-दर्शन की उपादेयता

डॉ. मयानंद उपाध्याय (शोध निर्देशक)
एसोसिएट प्रोफ़ेसर एवं विभागाध्यक्ष
शिक्षा विभाग
आर एस के डी कॉलेज, जौनपुर
अंकुर सहाय श्रीवास्तव (शोधार्थी)
पूर्वांचल विश्वविद्यालय
जौनपुर, उत्तरप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर उच्च कोटि के विचारक, कवि, समाज सुधारक होने के साथ-साथ महान शिक्षा शास्त्री भी थे। उनका पूरा जीवन ही शिक्षा से ओत-प्रोत था। किसी मौलिक सृजन का दावा न करते हुए उन्होंने परम पुरुष (supreme man) के रूप में प्रकृति को सर्वोच्च समिति के रूप में स्वीकार किया। वे टैगोर ही थे, जिन्होंने 'विश्व भारती' की स्थापना कर शिक्षा के क्षेत्र में एक नई विचारधारा का सूत्रपात किया और 'शांति निकेतन' में अपने शिक्षा संबंधी प्रयोग से जीवन में शिक्षा का औचित्य समझाया। प्रस्तुत शोध पत्र में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित गुरुदेव टैगोर के शिक्षा दर्शन की वर्तमान में उपादेयता पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

बंगाल के अत्यंत ही संपन्न एवं सुसंस्कृत परिवार में प्रसिद्ध धर्म समाज सुधारक महर्षि देवेंद्र नाथ टैगोर के घर 6 मई 1861 को जन्मे कनिष्ठ पुत्र रवींद्र बचपन से ही अद्भुत प्रतिभा संपन्न थे। पिता देवेंद्र नाथ के जीवन का आधार साहित्य और दर्शन था, जिसे उन्नत करना पुत्र रवींद्र के जीवन का लक्ष्य था। संपन्न घर में जन्म लेने के कारण सर्वप्रथम इन्हें बंगाल के ओरिएंटल सेमिनरी स्कूल में दाखिल किया गया, किंतु यहां का वातावरण इन्हें पसंद नहीं आया। स्कूल छोड़कर घर पर ही बंगला, संस्कृत, अंग्रेजी, चित्रकला, संगीत आदि का अभ्यास करने लगे। 16 वर्ष की आयु में इन्होंने पहली लघुकथा लिखी। सन 1901 में शांति निकेतन की स्थापना की जो आदर्श प्राकृतिक शिक्षण संस्थान 'विश्व भारती विश्वविद्यालय' के नाम से प्रसिद्ध है। कोलकाता विश्वविद्यालय ने इन्हें डी.लिट. की उपाधि प्रदान की। सन 1913 में गीतांजलि कृति पर साहित्य का नोबेल प्राप्त करने वाले ये इकलौते ऐसे कवि हैं जिनके लिखे दो गीत दो देशों के राष्ट्रगीत बने एक भारत का और दूसरा बांग्लादेश का।

टैगोर में देशभक्ति और जन कल्याण की प्रबल भावना थी, जिसने इन्हें विश्वकवि और समाज सुधारक के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया।

टैगोर के कर्तृत्व की आठ प्रमुख दिशाएं थी: साहित्य, संगीत, दर्शन ,कला ,समाज-सुधार ,शिक्षा, ग्राम उन्नति और साधना। गुरुदेव के रूप में ख्यात रवींद्र नाथ टैगोर दार्शनिक के साथ-

साथ शिक्षा शास्त्री भी थे। 7 अगस्त 1941, को इस महान समाज सुधारक ने अपना शरीर त्याग दिया।

शिक्षा-दर्शन

टैगोर ने अपने जीवन-दर्शन के विकास के साथ-साथ शिक्षा-दर्शन का भी विकास किया। साहित्य और संगीत के साथ-साथ उनका यदि कोई पक्ष उज्ज्ववल है तो वह दर्शन का है, दर्शन के क्षेत्र में उनका स्थान अत्यंत उच्च है, जिस प्रकार अपने समय में वे साहित्य के शिखर पुरुष थे उसी प्रकार दार्शनिक चिंत्न के क्षेत्र में भी वे धुरीण थे।

अपने अनुभव के आधार पर शिक्षा के सिद्धांतों की खोज करते हुए प्रगतिवादी रूसो की तरह टैगोर ने भी बालक की शिक्षा का सर्वश्रेष्ठ साधन प्रकृति को माना है। इनका मानना था कि मानव और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में परस्पर मेल और प्रेम का कारक प्रकृति ही है टैगोर के अनुसार शिक्षा दर्शन रहस्यवाद से जुड़ा है और यह रहस्यवाद स्वस्थ सबल और विस्तृत है बालक स्वतंत्र वातावरण में सच्ची शिक्षा प्राप्त करता है और यह सच्ची शिक्षा वह है जिसका उद्देश्य है कि वह बालक को जीवन और विश्व स्तर से उसके मिलन अर्थात समायोजन के मध्य सेतु बनकर संतुलन स्थापित करे।

शिक्षक के प्रति विचार

गुरुदेव टैगोर ने शिक्षक को उच्च स्थान प्रदान किया है। इनका मानना है कि शिक्षा केवल शिक्षक के द्वारा ही नहीं दी जा सकती है, शिक्षक ज्ञानी, संयमी एवं बच्चों के प्रति समर्पित होना चाहिए। शिक्षक को चाहिए कि वह छात्रों / बालकों को जीवन की गति और मस्तिष्क के बंधन से मुक्त करे। शिक्षक ऐसा होना चाहिए जो कि स्व-अनुभव द्वारा अधिक से अधिक सीखने में बालक की सहायता करे, उसे प्रेरणादायी और शिक्षाप्रद अनुभव प्रदान करें। शिक्षक का कोई भी कार्य बालक को हतोत्साहित न करे और न ही उसकी रचनात्मकता में बाधक हो। शिक्षक को शिक्षण विधियों से हटकर जीवन के सिद्धांतों, मानव-आत्मा की पवित्रता और व्यक्तिगत प्रेम में विश्वास करना चाहिए। प्रेम और सहानुभूति के साथ उसे अपने कर्तव्य का निर्वहन करना चाहिए।

पाठ्यक्रम के प्रति विचार

टैगोर के अनुसार बालक के समुचित विकास के लिए क्रिया प्रधान पाठ्यक्रम का निर्माण होना चाहिए। टैगोर प्रकृति के साथ-साथ ललित कलाओं के भी अनन्य प्रेमी हैं। अतः इनके अनुसार पाठ्यक्रम में खेलकूद, अभिनय आदि का भी समुचित स्थान होना चाहिए। इनके अनुसार पाठ्यक्रम इतना व्यापक होना चाहिए कि उसकी परिधि में बालक के जीवन के सभी पक्षों का विकास हो सके। सिलाई, बुनाई, बर्तन बनाना, गायन ,नृत्य ,समाजसेवा, प्रयोगशाला के कार्य, परिभ्रमण आदि क्रियाएं पाठ्यक्रम के अंग की भांति हैं और इसीलिए टैगोर ने अपने विश्व भारती के पाठ्यक्रम में इन सब को महत्वपूर्ण स्थान दिया जिसे आज अनुभव केंद्रित पाठ्यक्रम के रूप में देखा जाता है।

शिक्षा-दर्शन के मूल सिद्धांत

शिक्षा दर्शन के आधारभूत सिद्धांतों का प्रतिपादन टैगोर ने स्वयं किया। शांतिनिकेतन में शिक्षा दर्शन को व्यावहारिक रूप देने के लिए इन्होंने मूल सिद्धांतों की खोज की ; इनके अनुसार-

(1) छात्रों में चित्रकला अभिनय संगीत की योग्यता का विकास किया जाना चाहिए।

(2) भारतीय समाज और इसकी विचारधारा की पृष्ठभूमि के विषय में समग्र जानकारी दी जानी चाहिए।

(3) छात्रों को प्रकृति से जुड़ी जानकारी एवं प्रकृति के प्रति सजगता सहजता और घनिष्ठता प्रदान की जानी चाहिए।

(4) जन्मजात शक्तियों एवं व्यक्तित्व के सर्वांगीण और सामंजस्य पूर्ण निर्माण की क्षमता का विकास ही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए।

(5) शिक्षण विधि का आधार जीवन प्रकृति और समाज की वास्तविक पर सिद्धियां होनी चाहिए ।

निष्कर्ष

रवींद्रनाथ टैगोर न केवल प्रगतिवादी थे बल्कि उनमें आदर्शवाद, प्रयोजनवाद, यथार्थवाद के साथ-साथ मानववाद के गुण भी स्पष्ट रूप से देखने को मिलते हैं। मूल रूप से प्रकृति प्रेमी टैगोर कहते हैं- "सर्वोत्तम शिक्षा वही है, जो सृष्टि से हमारे जीवन का सामंजस्य स्थापित करती है। "टैगोर का सम्मान एक महाकवि एक महान दार्शनिक और महान शिक्षा शास्त्री के रूप में है। रवींद्रनाथ के शिक्षा दर्शन को उनके समाज सुधार का ही एक अंग माना जाता है, पर उसे एक स्वतंत्र विषय के रूप में मान्यता देना अधिक उपयुक्त है। वे मैकाले प्रवर्तित शिक्षा-पद्धति के विरोधी थे। उसकी अपूर्णता और दोषों को दूर करने के लिए ही उन्होंने अपना शिक्षा-दर्शन प्रस्तुत किया और शांति निकेतन में 'विश्व भारती' की स्थापना कर उसका एक मूर्त रूप लोगों के सामने रखा। शिक्षा को यथार्थ और व्यावहारिक बनाए रखने, मानव एकता की भावना विकसित करने तथा सभी संस्कृतियों एवं धर्मों के संबंध हेतु टैगोर का शिक्षा दर्शन बहुत ही उपयोगी है ।

संदर्भ ग्रंथ

1 शब्द ब्रह्म (शोध पत्रिका) - रवीन्द्र नाथ टैगोर का शिक्षा दर्शन, डॉ बलबीर सिंह जाम्वाल

2 चौहान आर एस (एन. डी.), शिक्षा एवं शिक्षण सिद्धांत, साहित्य प्रकाशन हॉस्पिटल रोड आगरा

3 गुरु शरण दास त्यागी, शिक्षा के दार्शनिक परिप्रेक्ष्य, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा

4 सप्तपर्णी (रवींद्रनाथ ठाकुर विशेषांक), पृष्ठ 30-31

5 भारतीय शिक्षा दार्शनिक, कीर्ति देवी सेठ

6 टैगोर वर्क्स, विश्व भारती संस्करण, खंड 13

7 रवींद्र जीवनी, प्रभात कुमार उपाध्याय